

शिक्षक के सच्चे स्वरूप को जिया और साकार किया

- बृजेन्द्र कुमार मिश्र, मुम्बई



जीवन को प्रभु का प्रसाद सा ग्रहण किया, आभार किया,
शिक्षक के सच्चे स्वरूप को जिया और साकार किया।

कोई वाहन नहीं चलाया कदमों से नापे रस्ते,
चार कोस विद्यालय आना-जाना था हँसते-हँसते।
घोती, कुर्ता, सदरी, टोपी में हर मौसम पार किया।
शिक्षक के सच्चे स्वरूप को....

सीधा सादा जीवन यापन खर्च फिजूल नहीं कोई,
सीख बचत की ऐसी दी कि पाया भूल नहीं कोई।
रीति रिवाजों से समझौता किन्तु न एकौ बार किया।।
शिक्षक के सच्चे

रामचरित मानस की प्रेमी पत्नी धर्म परायण थीं,
साल में लगभग एक बार, होती अखण्ड रामायण थी।
सदाचरण का सद् उदाहरण हम सब को सौ बार दिया।
शिक्षक के सच्चे

सालगिरह, शादी, जनेऊ या फिर तिथि हो मुण्डन की,
एक एक की नोट किए थे अपने सारे परिजन की।
भूल हुई यदि कभी किसी से, उसको तुरत सुधार दिया।
शिक्षक के सच्चे

हुए रिटायर थके नहीं पर कर्म योग के हरकारे,
कान्यकुब्जियत बची रहे ऐसे विचार मन में धारे।

शुरू किया पत्रिका प्रकाशन स्वयं प्रचार प्रसार किया।
शिक्षक के सच्चे

लेख, आवरण, भाषा, शैली सोच समझ कर चुनते थे,
किंवदंतियों से पुरखों की नई कहानी बुनते थे।
आलोचना करे कोई तो करे, नहीं प्रतिकार किया।
शिक्षक के सच्चे

मितव्ययी होकर भी बच्चों को उत्साहित करते थे,
टॉफी कम्पट का लालच देकर प्रोत्साहित करते थे।
आने-शाने, आने-शाने बोल-बोल दुलार किया।
शिक्षक के सच्चे

जीवन के अन्तिम पड़ाव तक सबका हाल चाल लेते,
जितना संभव स्वागत करते अपना कष्ट टाल देते।
भर झोली आशीष अन्त तक सबको बारम्बार दिया।
शिक्षक के सच्चे

कर्मनिष्ठ, कर्तव्यनिष्ठ और धर्मनिष्ठ थे फूफा जी,
सदाचार का पाठ पढ़ाते गुरु वशिष्ठ थे फूफा जी,
सादा जीवन संस्कार में ऐसा उच्च विचार दिया।
शिक्षा के सच्चे स्वरूप को जिया और साकार किया।

जीवन को प्रभु का प्रसाद सा ग्रहण किया, आभार किया।।

(9565444555)